श्री क्षेत्रपाल भैराव चालीसा

पार्श्वनाथ भगवान की सूरत चित्त बरसाय।
क्षेत्रपाल चालीस लिखूँ गात मन हरसाय।।

क्षेत्रपाल भैरव सुखकारी, गुणगाती है दुनियाँ सारी।
क्षेत्रपाल का महिमा अतिभारी, क्षेत्रपाल नाम जपे नर नारी।।

जिनवर के है आज्ञाकारी, श्रद्धा रखते समतिक धारी।
प्रातः उठ जो क्षेत्रपाल धयता, ऋद्धि सिद्धि सब सम्पदा पाता।।

क्षेत्रपाल नाम जपे जो कोई, उसके नित मंगल होई।
जिन तन्दिर लाखों नर आवे, श्रद्धा से परसाद चढ़ावें।।

क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल आन पुकारें, भक्तों के सब कष्ट निवारें।
क्षेत्रपाल दर्शन शक्तिशाली, दर से कोई न जावे खाली।।

जो नर नित उठ तुमको ध्यावे, भूत प्रेत पास आने नहीं पावे।
डाकण छुमंतर हो जावे, दुष्ट देव आड़े नहीं आवे।।

दिव्य मणि है जैन धर्म की, जैन धर्म की-जैन धर्म की।
कल्पतरु है परतिख जावे नर, नाम मंत्र क्षेत्रपाल का लेकर।।

चौघडिया दूषण मिट जावे, काल राहू सब नाठा जावे।
परदेशों में नाम कमावे, मन वांछित धन संपदा पावे।।

तन में साता मन में साता, जो क्षेत्रपाल को नित्य मनाता।
विजय वीर अरु मणि भद्र की, अपराजित भैरव आदि की।।

जो नर भक्ति से गुण गावे, दिव्य रतन सुख मंगल पावे।
श्रद्धा से शीश झुकावे, क्षेत्रपाल अमृत रस बरसावे।।

मिल जुल कर सब नर फेरें, माला दोडया आवे बादल काला।
मेघ झरे ज्यों झरते निर्झर, खुशहाली आवे धरती पर।।

अन्न सम्पदा भर-भर पावे, चारों ओर सूकाल बनावे।
क्षेत्रपाल है सच्चा रखवाला, दुश्मन को मित्र बनाने वाला।।

देश-देश में क्षेत्रपाल गाजे, खूंट-खूंटू में डंका बाजे।
है नहीं अपना जिनके कोई, क्षेत्रपाल सहायक उनके होई।।

नाभी केन्द्र से तुम्हें बुलावे, क्षेत्रपाल झट-पट दौड़े आवे।
भूखे नर की भूख मिटावे, प्यासे नर को नीर पिलावे।।

इधर-उधर अब नहीं भटकना, क्षेत्रपाल के नित पांव पकड़ना।
वांछित संपदा आन मिलेगी, सुख की कलियाँ नित्य खिलेंगी।।

क्षेत्रपाल है गण खरतर के देवा, सेवा से नर पाते मेवा।
कीर्ति रत्न की आज्ञा पाते, हुक्म हाजरी सदा बजाते।।

औम हरि भैरव, कष्ट निवारक भोला भैरव।
नैन मूंद धुन रात लगावे, सपने में नर दर्शन पावे।।

प्रश्नों के उत्तर झट मिलते, रास्ते के कटक मिटते।
क्षेत्रपाल भैरव नित ध्यावों, संकट मेटों मंगल पावो।।

क्षेत्रपाल जपन्ता मालम-माल, बुझ जाती दुखों की ज्वाला।
नित उठ जो चालीसा गावें, धन सुत से घर स्वर्ग बनावे।।

दोहा

क्षेत्रपाल चालीसा पढ़े मन में श्रद्धाधार,
कष्ट कटे महिमा बढ़े सम्पदा होत अपार।
चालीसा को "सब ध्यावै क्षेत्रपाल" को शीश नवावें।।